जनसत्ता की खोज खबर के बाद यह जिज्ञासा - कोई नया संग्रह आया है शैलेन्द्र जी?

जी, लेकिन एक ही प्रति बची है। प्रकाशक से मंगाता हूं। तब आपको दूंगा। फिलहाल, बस देख लीजिए।

किताब मैंने उनको दे दी। शायद पूरी बात वे सुन नहीं पाये। किताब उलटने पलटने के बाद कहा -ये पर कुछ लिख द।

उनकी इस सहजता पर मैं बस मुस्करा कर रह गया। मीरा जी को मैं यही बता चुका था। प्रतियां आने के बाद उन्हें देने का वादा भी किया। पर चकिया वाले इस बड़े कवि से क्या कहता। हंसी खुशी के साथ सादर भेंट करने के अलावा।

ब्लर्ब हम लिखब

बाटेनिकल गार्डेन के पास केदार जी की बहन के घर उनसे मिलने के लिये बेलघरिया से निकला तो विमलेश त्रिपाठी से ठीक ठीक ठिकाना पूछ लिया । हावड़ा पहुंच कर केदार जी को फोन किया तो पता चला कि वे गुवाहाटी में हैं। किसी आयोजन में शिरकत करने। मैंने मिलने का मकसद बताया तो उनका आदेश मिला कि अजय पांडेय की पाण्डुलिपि घर पहुँचा दूं। बलिया के इस युवा कवि ने अपने कविता संग्रह की पाण्डुलिपि मेरे पास भेज दी थी। इस आग्रह के साथ कि उसे मैं केदार जी तक पहुँचा दूं। कविवर ने अजय की किताब की भूमिका लिखने का भरोसा दिया था। और अजय ने मेरे पास कि जब केदार जी यहां आयें तो मैं उन तक पहुँचा दूं। मैं भला किससे कहता। हावड़ा में एक मात्र अंशकालिक सम्वाददाता। वह खबर जुटाये या...। खैर, मैंने खुद जाना ही उचित समझा। पर उनसे उस बार मिलना नहीं हो पाया था। इससे पहले कोलकाता के जनसंसार के दफ्तर में आयोजित एक कार्यक्रम में केदार जी को अपना तीसरा संग्रह अपने ही देश में सौंपा था तो वे बहुत खुश थे। तब यह वादा भी किया था कि - तहार अगला संग्रह क ब्लर्ब हम लिखब।

जी, हमार खुशनसीबी।

लेकिन, ऐसा हो नहीं पाया। उस दिन मैं अजय की पाण्डुलिपि दीदी को सौंप लौट आया था। अजय और केदार जी को सूचना दे दी थी।

और यह पहली मर्तबा था जब मीरा जी की कार से उन्हें उस घर पर छोड़ने पहुँचा था। रास्ते में ही पूछ लिया था कि मनियर जाना हो पाता है? मनियर यानी पैतृक निवास। सलाह यह कि जाना चाहिये बीच-बीच में।

कम्युनिस्ट कवि

इस मुलाकात के पहले दिसंबर, 2015 के आखिरी दिन उनसे मिलना संभव हुआ था। विमलेश त्रिपाठी का मेल पर संदेश और युवा कवि आनंद गुप्ता का कविता पाठ के लिए फोन आया था। पता चला कि उसकी अध्यक्षता करेंगे आदरणीय कवि केदारनाथ सिंह तो इसी बहाने उनसे मुलाकात का भी जी हो आया। बाद में खबर मिली कि कविता पाठ अब दूसरे सत्र में होगा पहले की जगह। यानी दो बजे बाद तो मुझे राहत भी मिली। यह मेरे लिए अनुकूल था। देर से सोने और विलंब से बिस्तर छोड़ने वाला जीव जो ठहरा। खैर, पौने दो बजे के करीब फेडरेशन सोसायटी हाल पहुंचा तो केदार जी सीढ़ियां उतर रहे थे-चाहनेवालों से घिरे। मैंने उन्हें अभिवादन किया ही था कि उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया कसकर और करीब पांचेक मिनट तक पकड़े रहे । गेट तक बतियाते हुए-भोजपुरी में। केदार जी से कुछेक मुलाकात पहले से ही है।

नमस्ते, कैसन बानी...?

इस बार उनकी शिकायत-तुहसे भेटे ना हो पाएला... चार जनवरी से इहें रहिब, मिलिह...!

केदार जी से शायद दो-तीन साल पहले मिला था और अपना तीसरा संग्रह- अपने ही देश में, भेंट किया था। तभी उन्होंने बड़े स्नेह से कहा था-तहार अगला संग्रह क ब्लर्ब हम लिखब... पर अगले संग्रह का ब्लर्ब आदरणीय अग्रज कवि विजेंद्र जी लिख चुके थे। लेकिन प्रकाशक चुपाए बैठे थे। इसके बाद वाला संग्रह बस आने ही वाला था। यह चकाचौंध का अंधेरा संग्रह था।

खैर, हिंदी मेला जाने की यह रही उपलब्धि। एक हासिल यह भी कई नवोदित कवयित्रियों की स्त्री विमर्श से संबंधित कविताएं सुनने को मिलीं।

केदार जी से मेरी पहली क्षणिक मुलाकात शायद कोलकाता के श्री जैन विद्यालय में नामवर सिंह के 75वें जन्मदिन के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में हुई थी। उसमें परमानंद श्रीवास्तव जी भी आए थे। उन दिनों जनसत्ता में मैं मुख्य उपसंपादक था। बड़ी मुश्किल से कहीं जाने का मौका निकल पाता था। मैं अपना पहला संग्रह देने के इरादे से ही गया था। जनपथ की प्रति मैं शायद केदार जी और परमानंद जी को ही दे पाया था। नामवर जी कई लोगों से घिरे थे, सो संकोचवश उन तक पहुंचने का साहस नहीं जुटा पाया था। परमानंद जी ने उस संग्रह की एक कविता का जिक्र अक्षर पर्व के अपने एक आलेख में किया था।

इसके बाद कई वर्षों बाद अपने सहकर्मी, कवि मित्र अरविंद चतुर्वेदी के काव्य संग्रह के लोकार्पण समारोह में उनके बगलगीर होने और उनकी मौजूदगी में मित्र की किताब के बहाने कुछ शब्द बोलने का मौका मिला था। नेशनल बुक ट्रट की ओर से आयोजित पुस्तक मेले में बरसात के कारण रौनक कम थी। हम बूंदा-बांदी में ही पहुंचे थे। तब अटल जी की सरकार थी और इंडिया शाइनिंग का शिगूफा जोरों पर था। हमने इस बाबत भी दो-चार शब्द जाया कर दिए थे। इस पर पांचजन्य में केदार जी के साथ मुझे भी आड़े हाथों लिया गया था। उन्हें कम्युनिस्ट कवि का तमगा दिया था और मुझे वाम नजरिए के चश्मे से चीजों की अनर्गल रिपोर्टिंग करने वाला पत्रकार। बहरहाल, मुझे खुशी हुई। मैं वाम-प्रगतिशील सोच के ही करीब रहा हूं। पर पत्रकारिता में सबकी खबर ले और सब की खबर दे का हिमायती। जनसत्ता, जिसमें अपना पच्चीस साल गुजरा, की यही घोषित नीति भी रही।

बहरहाल, केदार जी ने इस बाबत फोन कर पूछा था- पांचजन्य देखल ह, तहरा से बड़ा नाराज बा...

मैंने तब तक उसे नहीं देखा था। बाद में हिंदी भाषी समाज के अशोक सिंह ने उस पन्ने की कतरन मुझे उपलब्ध कराई थी। ■